भए प्रगट कृपाला दीनदयाला | By Tripti Shakya |

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला,
कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी,
अद्भुत रूप निहारी ॥

लोचन अभिरामा, तनु घनस्यामा,
निज आयुध भुजचारी ।
भूषन बनमाला, नयन बिसाला,
सोभासिंधु खरारी ॥

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला,
कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी,
अद्भुत रूप निहारी ॥

कह दुइ कर जोरी, अस्तुति तोरी,
केहि बिधि करूं अनंता ।
माया गुन ग्याना तीत अमाना,
वेद पुरान भनंता ॥

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला,
कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी,
अद्भुत रूप निहारी ॥

करुना सुख सागर, सब गुन आगर,
जेहि गावहिं श्रुति संता ।
सो मम हित हितकारी, जन अनुरागी,
भए प्रगट श्रीकंता ॥

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला,
कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी,
अद्भुत रूप निहारी ॥

ब्रह्मांड निकाया, निर्मित माया,
रोम रोम प्रति बेद कहै ।
मम उर सो बासी, यह उपहासी,
सुनत धीर मति थिर न रहै ॥

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला,
कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी,
अद्भुत रूप निहारी ॥

उपजा जब ग्याना, प्रभु मुसुकाना,
चरित बहु बिधि कीन्ह चहै ।
कहि कथा सुनाई , मातु बुझाई,

जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला,
कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी,
अद्भुत रूप निहारी ॥

माता पुनि बोली, सो मति डोली,
तजहु तात यह रूपा ।
कीजै सिसुलीला, अति प्रियसीला,
यह सुख परम अनूपा ॥

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला,
कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी,
अद्भुत रूप निहारी ॥

सुनि बचन सुजाना, रोदन ठाना,
होइ बालक सुरभूपा ।
यह चरित जे गावहिं, हरिपद पावहिं,
ते न परहिं भवकूपा ॥

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला,
कौसल्या हितकारी ।
हरषित महतारी, मुनि मन हारी,
अद्भुत रूप निहारी ॥

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ad%e0%a4%8f-%e0%a4%aa%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a4%97%e0%a4%9f-%e0%a4%95%e0%a5%83%e0%a4%aa%e0%a4%be%e0%a4%b2%e0%a4%be-%e0%a4%a6%e0%a5%80%e0%a4%a8%e0%a4%a6%e0%a4%af%e0%a4%be%e0%a4%b2%e0%a4%be-by-tr/